Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 5, May - 2026

DOIs:10.2018/SS/202605005 --:-- Research Paper / Article / Review

संपोषित ग्राम विकास एवं गांधीविचार : रचनात्मक संस्थाओ के परिप्रेक्ष्यमें अभ्यास

डॉ. मोहंमदसईदभाई अब्दुलहकिम कुरेशी
मददनीश प्राध्यापक(अध्यापक सहायक), अर्थशास्त्र विभाग
श्री एम. आर. देसाई आर्ट्स एवं इ. इ. लहेर कोसाडीया कोमर्स कॉलेज, चीखली.
Email - saiedkureshi@gmail.com

शोध सार: वर्तमान युग में व्यक्ति और राष्ट्र दोनों अपने विकास की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, किन्तु इस विकास के साथ प्रकृति को नुकसान पहुंचने की समस्याएं भी उत्पन्न हो रही हैं। विकास तो एक सही माध्यम है, लेकिन औधोगिकरण और शहरीकरण के तंत्र से न केवल मानव बल्कि प्रकृति और जीव-सृष्टि को भी खतरा है। इस समस्या का समाधान के लिए संवेदनशील ग्रामीण विकास अधिक जरूरी है, जिससे कि स्थानांतरण और शहरीकरण से उत्पन्न समस्याओं का समाधान किया जा सके। महात्मा गांधी ने ग्रामीण विकास के लिए कई रचनात्मक कार्यक्रम शुरू किए हैं। इन रचनात्मक कार्यक्रमों को अपना मकसद बनाकर कई स्वैच्छिक संगठन काम कर रहे हैं, जो गांधीवादी दृष्टिकोण से प्रेरित हैं। रचनात्मक संगठनों द्वारा किए जाने वाले कार्यक्रमों को जानने और उनके माध्यम से संपोषित ग्रामीण विकास की संभावनाओं को जानने का उद्देश्य इस अभ्यास का है। यह अभ्यास गुणात्मक संशोधन पद्धति पर आधारित है। अभ्यास में ग्रामीण समस्याओं को आर्थिक, सामाजिक, संरचनात्मक, और पर्यावरणीय माध्यमों में विभाजित करके उनके निवारण के लिए संगठनों द्वारा किए जाने वाले कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला गया है। अभ्यास के नतीजे में यह प्रकट हुआ कि रचनात्मक संगठनों द्वारा संपोषित ग्रामीण विकास के विभिन्न कार्यक्रमों ने ग्रामीण आर्थिक, सामाजिक, संरचनात्मक, और पर्यावरणीय विकास को बढ़ावा दिया है।

प्रमुख शब्द : संपोषित ग्राम विकास, रचनातमक कार्यक्रम, रचनात्मक संस्था, गांधी विचार ।

1. प्रस्तावना : वर्तमान युग में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र अपने विकास की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। अब विकास की दिशा में प्राधानता संपोषित विकास को दी जा रही है, जिसमें पहले आय की वृद्धि को प्राथमिकता नहीं दी जाती है। इसलिए व्यक्ति, समाज और राष्ट्र अपने और आनेवाली पीढ़ियों के भविष्य के बारे में चिंतित हैं। इसी दौर में व्यक्ति कार्य कर रहे हैं, जिससे कि उसकी चिंताओं को समाप्त किया जा सके। औधोगिकरण और आय और सुविधा प्राप्ति की भागदौड़ मानव को प्रदूषण और प्राकृतिक आपदाओं की सोगात देती है। यह आवश्यक है कि इन समस्याओं का सामना इस प्रकार किया जाए कि आनेवाली पीढ़ियों को आर्थिक, सामाजिक, संरचनात्मक और पर्यावरणीय सुविधाएं मिले, जैसे कि आज की पीढ़ियां प्राप्त कर रही हैं। किन्तु यह कैसे होगा, कुज़्नेट विकास और पर्यावरण का मॉडल हमें यह बताता है कि, विकास की शुरुआत पर्यावरणीय विनाश से होगी तो क्या हम उसका अनुसरण करेंगे? गाँवों से नगरों की ओर की आवाज़ एक चिंता का विषय भी है।

भारतीय विचारक मोहनदास गांधी ने 100 साल पहले ग्राम विकास की अवधारणा छोड़ दी थी, जो हमारे लिए आज भी महत्वपूर्ण है। उसके संरक्षण में, हम स्वराज की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं, जो गाँवों के विकास से संबंधित है। सरकार भी अपने कार्यक्रमों में उसे प्राथमिकता दे रही है। तो क्या यह गांधीवादी विचार आधारित ग्राम विकास है और क्या हम उसे संभाल सकते हैं? इस मुद्दे को ध्यान में रखते हुए, यह अभ्यास किया जा रहा है।

2. शोध प्रश्न :

मानवी पहले गाँव में अपना जीवन गुजरान करता है, किन्तु निम्नलिखत ग्रामीण समस्याओ उसके सामने आती है।

आर्थिक	सामाजिक	संरचनात्मक	पर्यावरणीय
कृषिमें अल्प निवेश	अल्प शिक्षा	शिक्षण संस्थानो का अभाव	वनो की कटाई

अल्प उत्पादन	आरोग्य की समस्या	आरोग्य की सुविधा का अभाव	कुदरती आपदा
अल्प आय	विवाद	माहिती संचार	प्रदुषण
अल्प लाभ या घाटा	जातिवाद	मार्ग एवं परिवहन	
निम्न जीवन स्तर	व्यसन	अपर्यापत बेकिंग सुविधा	
संक्रामक मांग का अभाव	देखा-देखी	अस्वच्छ पीने का पानी	
गरीबी	दहेज	बीमा सुविधा	
ऋण का भार	मोघे सामाजिक खर्च	बीजली की अपर्यापत सुविधा	
बैरोजगारी		कृषि सुविधा का अल्प प्रमाण	

आकृत्तिमें दर्शित समस्याओ के निराकरण के गामीण मानवी के समक्ष दों रास्ते है जो निम्ननुसार है ।

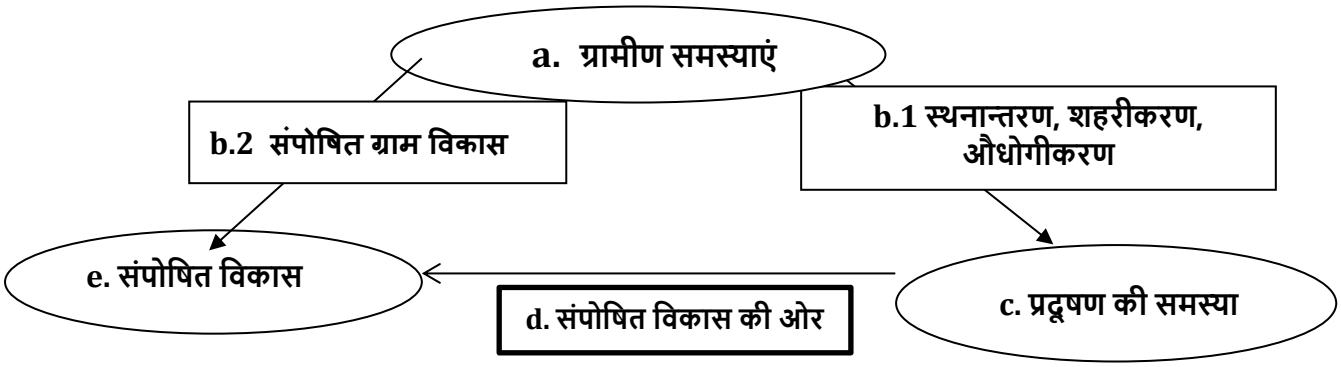

उपर्युक्त विचार में, संपोषित विकास के दो मार्गों का उल्लेख किया गया है। पहला मार्ग a-b1-c-d-e जो कि मुख्य आर्थिक विचारधारा को ध्यान में रखता है, और दूसरा मार्ग a-b2-e जो गांधीवादी विचारधारा को अपनाता है। पहले मार्ग पर ध्यान देकर, यु.एन ने संपोषित विकास के लक्ष्य साधा है, जबकि दूसरे मार्ग पर ध्यान देकर, गांधीवादी चिंतक काम कर रहे हैं।

इस अभ्यास के शोध प्रश्न निम्नलिखित हैं:

- क्या गांधीवादी विचार में संपोषित ग्रामविकास को व्याख्यात किया गया है?
- क्या रचनात्मक संस्थाएं गांधीवादी आधारित ग्रामविकास पर काम कर रही हैं?
- क्या रचनात्मक संस्थाओं द्वारा किए गए कार्य से ग्रामीण समस्याओं का समाधान हुआ है?
- क्या रचनात्मक संस्थाएं द्वारा संपोषित ग्राम विकास संभव है?

3. साहित्य समीक्षा :

बेनोय कृष्णा हाजरा (2018) "SIGNIFICANT GANDHIAN COMMUNICATION AND ITS RELEVANCE FOR SUSTAINABLE RURAL DEVELOPMENT IN INDIA " में कहते हैं कि, स्वतंत्रता के बाद से भारत ने उल्लेखनीय सतत सामाजिक-आर्थिक विकास हासिल किया है, किन्तु वह समाज के ग्रामीण, आदिवासी और दूरदराज क्षेत्रों के विकास में शहरी क्षेत्रों के साथ तालमेल नहीं रख सके। समाज के बड़े वर्ग को विकास से वंचित रखने की वजह से अशांति पैदा हो सकती है देश के सतत विकास के लिए अनुकूल नहीं है। लोगों को प्रेरित करने और ग्रामीण विकास के मार्ग में उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार की गांधीवादी संचार रणनीतियों का विकास और उपयोग किया गया है। गांधीजी के विचारों में कुटीर और लघु उद्योगों एवं पंचायती राज अवधारणा पर प्रकाश डालता है। यह अभ्यास विकास के गांधीवादी मॉडल का पता लगाने का प्रयास करता है और नई विश्व व्यवस्था में इसकी प्रासंगिकता या अप्रासंगिकता की जांच करता है।

मीनू शर्मा और शिखा (2016) ने "Exploring Gandhian Ideology for Sustainable Rural Development in India" में (i) आर्थिक अवधारणाओं का गांधीवादी दर्शन जो विकास से संबंधित है, (ii) आत्मनिर्भरता के गांधीवादी सिद्धांत, (iii) संतुलित विकास का गांधीवादी सिद्धांत, (iv) ट्रस्टीशिप का गांधीवादी सिद्धांत, (v) सतत विकास का गांधीवादी मॉडल, (vi) गांधीवादी सर्वोदय योजना, (vii) तपस्या और संयम की गांधीवादी अवधारणाओं पर अपने विचार रखे हैं ।

लोकेश जैन (2016) ने खेड़ा जिले के रढ़ू गाँव पर ध्यान केंद्रित करते हुए "ग्रामीण लोकों की बदलती उपभोगवृत्ति और उनके संपोषित विकास पर असर" का अध्ययन किया। यहाँ उनका कहना है कि ग्रामीण बाजारों को समग्र सोच के अनुरूप विकसित करने के लिए समाज, सरकार और स्वयंसेवी संगठनों को निस्वार्थ जागरूक प्रयास करने चाहिए, जो उल्लेखनीय है।

चैतन्य भट्ट (2011) ने 'नोखी माटीना दीवडा' पुस्तक में 14 लेखकों के 16 कार्यस्थलों या जीवन पर लेख संकलित किए हैं। इसमें कर्मशील और स्वेच्छिक संस्थाओं की गतिविधियों को आर्थिक और सामाजिक पहलुओं में विभाजित करते हुए, आर्थिक क्षेत्र में जैविक खेती, कृषि उपकरण और ग्राम विकास शामिल हैं, और सामाजिक क्षेत्र में स्वास्थ्य, शिक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसी गतिविधियाएं शामिल हैं।

रामनारायण पाठक और शांतिलाल देसाई (1969) ने 'गुजरातमें रचनात्मक संस्थाएं और सेवकों' में गाँधीजी की जन्म शताब्दी के अवसर पर गुजरात में गाँधीवादी विचारों पर चलने वाले संगठनों और कार्यकर्ताओं की गतिविधियों को प्रस्तुत किया है।

4. अभ्यास कें उद्देश्य :

प्रस्तुत अभ्यास के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- गांधीविचार आधारित संपोषित ग्रामविकास की अवधारणा को समझना।
- रचनात्मक संस्थाओं की कार्यप्रणाली और गांधीवादी विचारों के बीच संबंधों की जांच करना।
- रचनात्मक संस्थाओं द्वारा संपोषित ग्रामविकास की संभावनाओं की जाँच करना।

5. शोध पद्धति :

प्रस्तुत अभ्यास गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें शोधकर्ता ने संस्थाओं के प्रतिनिधियों से साक्षात्कार किया और संस्थाओं की रिपोर्टों का उपयोग किया है ताकि उन्हें शोध की माहिती प्राप्त हो सके।

नमूने का चयन:

प्रयुक्त अभ्यास केस स्टडी संशोधन पद्धति पर आधारित है। इसके लिए गुजरात राज्य में विभिन्न विभागों से पांच रचनात्मक संस्थाओं का चयन किया गया है।

गुजरात का क्षेत्र	चयन की हुए संस्था
कच्छ	ग्राम स्वराज संघ, नीलपर
सौराष्ट्र	सौराष्ट्र गांधीजी ग्रामोधार ट्रस्ट, गढडा
उत्तर गुजरात	लोकनिकेतन, रतनपुर
दक्षिण गुजरात	सर्वोदय आश्रम, पिंडवल
मध्य गुजरात	भाल नलकांठा प्रायोगिक संघ, गुंडी

माहिती विश्लेषण :

माहिती के विश्लेषण को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है, जिसमें ग्रामविकास की परिभाषाएं और गांधीवादी आधारित ग्रामविकास, गांधीवादी आधारित संपोषित विकास, रचनात्मक कार्यक्रम और रचनात्मक संस्थाएं, रचनात्मक संस्थाओं द्वारा गांधीवादी आधारित ग्रामविकास, रचनात्मक संस्थाओं द्वारा संपोषित ग्राम विकास शामिल हैं।

(क) ग्रामविकास की परिभाषाए

विकास का अर्थ है एक निर्धारित दिशा में मात्रात्मक और गुणात्मक परिवर्तन जो क्रियात्मक हो। जबकि ग्राम विकास का तात्पर्य ग्रामीण क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले कुछ कार्यात्मक परिवर्तनों से है। ग्रामीण विकास मानव जीवन और गतिविधियों के विभिन्न पहलुओं को शामिल करता है। इन पहलुओं को मुख्य रूप से चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है: (1) सामाजिक, (2) आर्थिक, (3) यांत्रिक, (4) प्रकृति। इन सभी पहलुओं का समन्वित और संतुलित विकास ही ग्राम विकास है। (शास्त्री, 1983)

यदि बड़ी आबादी को उन लोगों की सहायता करनी है जिन्हें सहायता की सबसे अधिक आवश्यकता है, तो ग्रामीण विकास को विकास रणनीतियों में सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। (विश्व बैंक, 1975)

भारत के लिए किसी भी सार्थक विकास रणनीति में, एकीकृत ग्रामीण विकास विकास प्रयासों का केंद्र बिंदु होना चाहिए। (मिन्हास, 1975)

ग्राम विकास ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली कम आय वाली आबादी के जीवन स्तर में सुधार लाने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की प्रक्रिया है। (लेलिनी, 2005)

(ख) गांधीविचार आधारित ग्रामविकास

गाँव गांधी के विचारों का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो पहली नज़र में गांधी के लेखन को पढ़ते समय देखा जा सकता है। 'सत्य के प्रयोग' में फीनिक्स और चंपारण आश्रम के मामले में ग्रामीण विकास के मुद्दे को एक रचनात्मक प्रयोग के रूप में भी देखा जा सकता है। गांधीजी की ग्राम स्वराज की अवधारणा है कि "प्रत्येक गांव एक आदर्श गणतंत्र होना चाहिए।" वह गणतंत्र अपने जीवन की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के लिए अपने पड़ोसियों से स्वतंत्र होगा, लेकिन अपने पड़ोसियों के साथ उन सभी मामलों में पारस्परिक सहायता से कार्य करेगा जिनमें वह सहयोगात्मक होगा। (हरिजन बंधु, 2-8-1942, पृष्ठ 236)

गांधी जी के सपनों का एक आदर्श गांव

ग्रामस्वराज के संबंध में गांधी ने कहा था, ''अगर गांव नष्ट हो जाएंगे तो हिंदुस्तान भी नष्ट हो जाएगा, फिर वह हिंदुस्तान नहीं रहेगा। संसार में इसका विशेष कार्य लुप्त हो जायेगा।" (प्रभु, 1963) 'मेरा स्वप्न का भारत' में गांधी ने ग्रामस्वराज का परिचय दिया और कहा, "भारत के आदर्श गांव की संरचना इस तरह की जाएगी कि यह पूर्ण स्वच्छता बनाए रखने में सहायक हो। इसमें अच्छी तरह हवादार झोपड़ियाँ शामिल होंगी, जो पाँच मील के दायरे में पाए जाने वाली सामग्रियों से निर्मित होंगी, झोपड़ियों की बाड़ लगाई जाएगी ताकि रहने वाले अपने घर के लिए पर्याप्त सब्जियाँ उगा सकें और मवेशी रख सकें। गाँव की सड़कों और गलियों को यथासंभव धूल-मुक्त बनाया जाएगा, गाँव में पर्याप्त कुएँ होंगे और सभी को इससे पानी भरने की अनुमति होगी। सभी के लिए पूजा स्थल, एक सार्वजनिक आराधनालय, मवेशियों को चराने के लिए गौचर, एक सहकारी डेयरी, व्यावसायिक शिक्षा पर ध्यान देने वाले प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय और विवादों को निपटाने के लिए पंचायतें होंगी। गाँव अपने उपभोग के लिए पर्याप्त अनाज, सब्जियाँ और फल उगाएगा, और अपने स्वयं के उपभोग के लिए पर्याप्त खादी का उत्पादन करेगा। यह एक आदर्श गाँव के मेरे दृष्टिकोण की रूपरेखा है।" (हरिजन बन्धु, 31/01/1937, पृष्ठ 375)

इस प्रकार, उपरोक्त निरूपण से पता चलता है कि गांधीजी की गांव की अवधारणा को उन्होंने एक संपूर्ण प्राणिक प्रक्रिया के रूप में विकसित किया था, जिसमें आर्थिक, सामाजिक, संरचनात्मक, और पर्यावरणीय पहलुओं को महत्व दिया गया। गांधीजी के गांव के आदर्श में स्वच्छता, सामाजिक समरसता, स्वयं सेवा, और पर्यावरण संरक्षण जैसे मूल्यों को समाहित किया गया था। उनके विचारों में नैतिकता का अत्यधिक महत्व था, जो एक समृद्ध और संतुलित समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण था।

आर्थिक	सामाजिक	संरचनात्मक	पर्यावरणीय
बुनियादी जरूरतों में आत्मनिर्भरता	बुनियादी शिक्षा	मार्ग एवं परिवहन	प्राकृतिक संसाधनों का किफायती उपयोग
आर्थिक जीवन में स्वदेशीकरण की भावना	प्राकृतिक इलाज (औषधालय)	माहिती संचार	मानव व्यवहार में परिवर्तन
व्यवसाय (खेती, खादी, ग्रामोद्योग, सहकारी आधार पर पशुपालन)	स्वच्छता एवं अस्पृश्यता का निवारण	बेकिंग	
पूर्ण रोज़गार	धर्मों के प्रति तटस्थ	पीने का पानी	
विकेन्द्रीकरण	सत्याग्रह	स्वच्छ आवास	
ट्रस्टीशीप का सिद्धांत		सिंचाई सुविधा	
जात मेहनत		गाँव की शेरीयाँ	
मशीनों का विरोध		बीजली	
अपरिग्रह और दरिद्रता निवारण		शौचालय	
आर्थिक समानता			
अहिंसात्मक अर्थव्यवस्था			
नैतिकता			

(ग) गांधीविचार आधारित संपोषित विकास

प्रदूषण की समस्या केवल भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के सामने है। इस समस्या को हल करने के लिए, सितंबर 2015 में संयुक्त राष्ट्र की ऐतिहासिक महासभा में 193 सदस्य देशों ने एक साथ मिलकर सतत विकास लक्ष्यों पर जोर दिया। इसमें 17 मुख्य लक्ष्य और 169 उप-लक्ष्य शामिल हैं, जो "ट्रांसफॉर्मिंग अवर वर्ल्ड: द 2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट" का एक हिस्सा है। यह एजेंडा 1 जनवरी 2016 से लागू हो गया है। समृद्ध विकास की परिभाषा को विभिन्न विचारों और विचारकों के अनुसार विभाजित किया जा सकता है।

'पर्यावरण अर्थशास्त्र: एक परिचय' में सुदर्शन अयंगर कहते हैं कि गांधीजी द्वारा सुझाए गए जीवन जीने के तरीके, गरीबी उन्मूलन के लिए उत्पादन प्रणाली और उपभोग के सिद्धांतों को सर्वोदय या गांधीजी के आर्थिक विचार कहा जा सकता है। उन्होंने इन सभी विचारों का उल्लेख एक वाक्य में किया, "प्रकृति हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए हर दिन पर्याप्त उत्पादन करती है और अगर हर कोई अपनी जरूरत का सामान ले और अधिक न ले, तो इस दुनिया में कोई गरीबी नहीं होगी और इस दुनिया में कोई भी व्यक्ति भूखमरी पीड़ित नहीं होगा।" (अयंगर, द्वितीय संस्करण, 2001, पृष्ठ संख्या 37) यह संतुलित विकास से जुड़ा है, जिसमें आर्थिक समस्याओं का समाधान, प्राकृतिक संसाधनों की उपयोगिता और प्राकृतिक संसाधनों की स्थिरता की समझ देखी जाती है।

गांधीवादी विचार और सतत विकास के बीच संबंधों की जांच करने पर पता चलता है कि गांधीवादी विचार निम्ननुसार तरीकों से संपोषित विकास से जुड़ा हुआ है।

- उत्पादन - स्वदेशी और आत्मनिर्भर में
- उपभोग - सीमित आवश्यकताओं के माध्यम से संतुष्टि
- वितरण - विकेंद्रीकरण, आर्थिक समानता
- स्वामित्व - ट्रस्टीशिप
- रोज़गार - पूर्ण रोज़गार
- अर्थव्यवस्था - अहिंसक अर्थव्यवस्था
- विकास - गाँव का संपोषित विकास
- संपूर्ण संपोषितता - नैतिकता

(घ) रचनात्मक कार्यक्रम एवं रचनात्मक संस्थाए

रचनात्मक कार्यक्रम क्या है, इसे स्पष्ट करते हुए गांधी कहते हैं, "रचनात्मक कार्यक्रम को सत्य और अहिंसा के माध्यम से, यानी पूर्ण स्वतंत्रता के निर्माण के माध्यम से, एक और अधिक संक्षिप्त नाम पूर्ण स्वराज से जाना जा सकता है।" (गांधी, 1941, 6) इसका मतलब यह है कि गांधी ने रचनात्मक कार्यक्रमों को विकास के कारण के रूप में देखा, जो कि पूर्ण स्वराज की ओर ले जाता है, और इस उद्देश्य के दो मुख्य साधन उन्होंने सत्य और अहिंसा के रूप में वर्णित किए। गांधीजी अठारह रचनात्मक कार्यक्रमों को शामिल करते हैं जिनमें (1) कोमी एकता, (2) अस्पृश्यता-निवारण, (3) शराबबन्दी, (4) खादी, (5) दूसरे ग्रामोद्योग, (6) गाँवो की सफाई, (7) नयी या बुनियादी तालीम, (8) बडो की तालीम, (9) स्त्रियाँ, (10) आरोग्य के नियम की शिक्षा, (11) प्रांतीय भाषाएँ, (12) राष्ट्रभाषा, (13) आर्थिक समानता, (14) किसान, (15) मजदूर, (16) आदिवासी, (17) कोढी और (18) विद्यार्थी शामिल हैं। (हालाँकि बाद में 19वाँ रचनात्मक कार्यक्रम 'गोसेवा' जोड़ा गया है, जिस पर नारायण देसाई कहते हैं, "गोसेवा का कार्यक्रम इन अठारह कार्यक्रमों के दिए जाने के बाद आया, हालाँकि गाँधीजी ने यह गतिविधि वर्षों पहले ही शुरू कर दी थी"। (देसाई, 2014)

नारायण देसाई (2014) रचनात्मक कार्यक्रमों को गांधीजी के तीन उपहारों में से एक मानते हैं। उनका यह भी मानना है कि रचनात्मक कार्यक्रमों का उद्देश्य अहिंसक सामाजिक संरचना का निर्माण करना है। इन कार्यक्रमों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करने के बजाय, उन्होंने आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक नींव को क्षेत्रों में तोड़ दिया है और पूरी अवधारणा को स्पष्ट करने की संभावना बनाई है।

दशरथलाल शाह (1988) ने "रचनात्मक कार्यक्रम आज" पुस्तक में नवंबर 1985 से मई 1987 की अवधि के दौरान लोकजीवन मासिक में प्रकाशित रचनात्मक कार्यक्रमों पर लेखों को संकलित किया है। जिसमें उन्होंने उक्त 18वें कार्यक्रम के अलावा 19वें कार्यक्रम 'पशु सुधार' को भी शामिल किया है। साथ ही वह कहते हैं, ''आज भी यह साफ लगता है कि देश को बैठाने के लिए बापू के इन रचनात्मक कार्यक्रमों के अलावा कोई उपाय नहीं है.''

रचनात्मक कार्यक्रम को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:

1. सामाजिक रचनात्मक कार्यक्रम: इसमें समाज के कमजोर, पिछड़े या हाशिये पर पड़े वर्गों के हित के लिए कार्यक्रम शामिल होते हैं। इसमें सामाजिक समानता, न्याय, और समाज के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रयास किया जाता है। उदाहरण के रूप में, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, गरीबी उन्मूलन, और जातिवाद के खिलाफ लड़ाई इस श्रेणी में आते हैं।
2. आर्थिक रचनात्मक कार्यक्रम: इसमें रोजगार, आर्थिक समानता, और जीवन की आवश्यकताओं की प्राप्ति से संबंधित कार्यक्रम शामिल होते हैं। इसमें आर्थिक विकास, उत्पादन, और आय के स्रोतों की सुविधा के लिए प्रयास किया जाता है।

कई कार्यक्रम दोनों ही सामाजिक और आर्थिक दोनों पहलुओं से जुड़े होते हैं, जैसे कि किसानों के लिए कृषि विकास कार्यक्रम जो उनकी आर्थिक स्थिति को सुधारने के साथ-साथ समाज में समानता भी बढ़ाने का प्रयास करते हैं।

किसी कार्यक्रम को सामाजिक या आर्थिक रचनात्मक कहा जाता है, वह उसके उद्देश्य और प्रभाव के आधार पर निर्भर करता है। ध्यान देने योग्य होता है कि विभिन्न कार्यक्रमों के प्रभाव को ठीक से मूल्यांकन किया जाए, ताकि सबसे उपयुक्त और प्रभावी कार्रवाई की जा सके।

सामाजिक कार्यक्रम		**आर्थिक कार्यक्रम**
अ	**क**	**ब**
कोमी एकता, अस्पृश्यता-निवारण , शराबबन्दी, गाँव की सफाई, नयी तालीम, बड़ों की तालीम, स्त्रीयाँ, आरोग्य के नियमों की शिक्षा, प्रान्तीय भाषाए, राष्ट्रभाषा, कोढी, विद्यार्थी	**किसान, मजदूर, आदिवासी, पशु-सुधार**	**खादी, ग्रामोद्योग, आर्थिक समानता**

उक्त मेंज में अ, ब, और क कार्यक्रम है। जिसमे अ कार्यक्रम सामाजिक रचनात्मक कार्यक्रम है और ब आर्थिक कार्यक्रम है। जबकि क कार्यक्रम आर्थिक एवं सामाजिक दोंनो तरह के है ।

गांधीवादी विचार में प्रस्तुत स्वराज और ग्रामस्वराज के आधार पर गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों के आधार पर काम करने वाले संगठनों को सरल भाषा में रचनात्मक संगठन कहा जा सकता है। इन संस्थानों का मूल और आधार गांधीवादी विचार में सन्निहित नैतिकता होनी चाहिए। गांधीवादी विचार और नैतिक मूल्यों के आधार पर समाज के लोगों को वंचित या हाशिए पर रहने की बजाय उनके उत्थान, जागरूकता और सशक्तिकरण के आधार पर शिक्षा, स्वास्थ्य, अस्पृश्यता निवारण, शराबबंदी जैसी चीजों का विकास करना। , खादी, ग्रामोद्योग, पर्यावरण संरक्षण और किसानों, आदिवासियों और दलित समुदाय के लिए संगठन मौजूद हैं। वे उनकी समस्याओं का स्थायी समाधान करके उन्हें सशक्त बनाने का प्रयास करते हैं।

गुजरात में गांधी की राह पर ग्राम विकास कार्य करनेवाली कई संस्थाएं हैं। जो गांधी की ग्रामस्वराज, रचनात्मक कार्यक्रम और सर्वोदय की सोच पर चलकर काम कर रही है। शोध में जो संस्थाओ को समाविष्ट किया गया है उनके रचनात्मक कार्यक्रम निम्नुसार है ।

संस्था का नाम	स्थापना	शिक्षा	आरोग्य	खादी	गृहउद्योग	जल संचय	राहतकार्य	आवास	शौचालय	अस्पृश्यता-निवारण	जनजागृति	खेती	गौशाला	शराबबन्दी	सफाई	पर्यावरण संरक्षण	अन्य
ग्राम स्वराज संघ, नीलपर	1979	√	√			√	√	√	√	√	√	√	√	√	√		√
सौराष्ट्र गांधीजी ग्रामोधार ट्रस्ट, गढडा	1948	√	√	√	√	√	√		√	√	√	√	√		√	√	√
लोकनिकेतन, रतनपुर	1961	√					√			√	√	√	√	√	√	√	√
सर्वोदय आश्रम, पिंडवल	1967	√	√	√		√	√	√	√	√	√			√	√	√	√
भाल नलकांठा प्रायोगिक संघ, गुंडी	1943	√		√		√	√			√	√			√	√		√

उपर्युक्त संस्थाओ द्वारा जो रचनात्मक कार्य किए गये है उसमे, साम्प्रदायिक एकता, अस्पृश्यता निवारण, शराबबंदी, खादी, अन्य ग्रामोद्योग, गाँव की सफ़ाई, नवीन प्रशिक्षण या बुनियादी शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, महिलाएँ, स्वास्थ्य शिक्षा, आर्थिक समानता, किसान, मजदूर, आदिवासी, छात्र आदि शामिल दिखे। इसके अलावा पशुपालन और राहत कार्य भी किया गया लगता है.

(ङ) रचनात्मक संस्थाओं द्वारा गांधीविचार आधारित ग्रामविकास

केस स्टडीमे समाविष्ट जो संस्थाए है उनके द्वारा किये जानेवाले ग्रामविकास के कार्यक्रम निम्नुसार है।

ग्राम स्वराज संघ, नीलपर	लोकनिकेतन, रतनपुर	सौराष्ट्र गांधीजी ग्रामोधार ट्रस्ट, गढडा	सर्वोदय आश्रम, पिंडवल	भाल नलकांठा प्रायोगिक संघ, गुंडी
शिक्षा के माध्यम से तालीम	गांधीवादी विचार का प्रचार-प्रसार	शैक्षणिक गतिविधियां	शिक्षण गतिविधि	शिक्षा
खादी	लोक शिक्षा	जल संचयन का कार्य	स्वास्थ्य गतिविधि	पानी की सुविधा
अंबर स्पिनिंग सेंटर-बदरगढ़	युवा जागरूकता और विकास	पशुपालन	कृषि विकास	खादी एवं ग्रामोद्योग
नशा मुक्ति	खादीकार्य	वाटरशेड योजना	नर्सरी ग्रामवन	पंचप्रथा
अन्याय का प्रतिकार	विनोबा साहित्य का वितरण	खेती	व्यवसाय के लिए सहायता	स्वास्थ्यरक्षा
स्वास्थ्यरक्षा	स्वास्थ्य सेवा और पर्यावरण	औजार	सामूहिक विवाह आयोजित करना	शोषण
साहित्यिक प्रकाशन	अस्पृश्यता का उन्मूलन	सिंचाई	पशुपालन	अस्पृश्यता का उन्मूलन
सूखा राहत गतिविधि-धोरवाडो (1986-87)	अन्याय का प्रतिकार	खादी	वारली चित्रा प्रशिक्षण स्टेशन भी शुरू किया गया है	सामाजिक परिवर्तन
गरीबी का प्रतिरोध: पशु सेवा कार्यक्रम (1993-94	व्यसन मुक्ति	ग्रामोद्योग	हर वर्ष सब्जी के बीज वितरित करना	समाज सेवा एवं राहत कार्य
खैर पुनरोद्धार कार्यक्रम	महिला जागरूकता एवं महिला कल्याण	हस्तशिल्प	अंबर चारखा तालीम	साहित्यिक प्रकाशन
सर्वोदय योजना का कार्यान्वयन (1991-2000	ग्रामीण स्वरोजगार	अस्पृश्यता का उन्मूलन	रात के अँधेरे के लिए धूप-दीप प्रदान करना	नैतिक ग्राम संगठन
	प्रेस एवं साहित्य प्रकाशन	शौचालय	सोलर कुकर का वितरण	
	नर्सरी	स्वास्थ्यरक्षा	शौचालय	
	बाँधों और जलाशयों की जाँच करना	महिला जागरूकता	पिलान मिलो की तैयारी	
	समाज सेवा एवं राहत कार्य लोकनिकेतन उपभोक्ता एवं ऋण सहकारी समिति	सौर ऊर्जा		
		वनरोपण		
		मवेशी शिविर		

(च) रचनात्मक संस्थाओ द्वारा संपोषित ग्राम विकास

संस्थाओ की ओर सें जो ग्रामविकास के जो काम हुए है उनहे आनेवाली पेढीओ के आर्थिक, सामाजिक, संरचनात्मक और पर्यावरणीय कार्यक्रमो में विभाजीत किये जा सकते है । यह कार्यक्रम निम्नुसार है।

संस्था का नाम	आर्थिक	सामाजिक	संरचनात्मक	पर्यावरणीय
ग्राम स्वराज संघ, नीलपर	• खादी • अंबर स्पिनिंग सेंटर-बदरगढ़	• शिक्षा के माध्यम से तालीम • नशा मुक्ति	• साहित्यिक प्रकाशन • सूखा राहत गतिविधि- धोरवाडो	वृक्षारोपण एवं उछेर

	• गरीबी का प्रतिरोध: पशु सेवा कार्यक्रम • सर्वोदय योजना का कार्यान्वयन	• अन्याय का प्रतिकार • स्वास्थ्यरक्षा	• खैर पुनरोद्धार कार्यक्रम	
सौराष्ट्र गांधीजी ग्रामोधार ट्रस्ट, गढडा	• पशुपालन • वाटरशेड योजना • खेती • औजार • खादी • ग्रामोद्योग • हस्तशिल्प • मवेशी शिविर	• स्वास्थ्यरक्षा • शैक्षणिक गतिविधियां • अस्पृश्यता का उन्मूलन • शौचालय • महिला जागरूकता	• जल संचयन का कार्य • सिंचाई	• सौर ऊर्जा • वनरोपण
लोकनिकेतन, रतनपुर	• खादीकार्य • ल्याण • ग्रामीण स्वरोजगार • प्रेस एवं साहित्य प्रकाशन • नर्सरी • बाँधों और जलाशयों की जाँच करना • लोकनिकेतन उपभोक्ता एवं ऋण सहकारी समिति	• गांधीवादी विचार का प्रचार-प्रसार • लोक शिक्षा • युवा जागरूकता और विकास • अस्पृश्यता का उन्मूलन • अन्याय का प्रतिकार • व्यसन मुक्ति • महिला जागरूकता एवं महिला क	• विनोबा साहित्य का वितरण • समाज सेवा एवं राहत कार्य	• स्वास्थ्य सेवा और पर्यावरण
सर्वोदय आश्रम, पिंडवल	• कृषि विकास • व्यवसाय के लिए सहायता • पशुपालन • वारली चित्रा प्रशिक्षण स्टेशन भी शुरू किया गया है। • हर वर्ष सब्जी के बीज वितरित करना। • अंबर चारखा तालीम • पिलान मिलो की तैयारी	• शिक्षण गतिविधि • स्वास्थ्य गतिविधि • सामूहिक विवाह आयोजित करें ताकि ग्रामीणों की सामाजिक लागत कम हो।	• रात के अँधेरे के लिए धूप-दीप प्रदान करना। • सोलर कुकर का वितरण। • शौचालय	• नर्सरी ग्रामवन
भाल नलकांठा प्रायोगिक संघ, गुंडी	• खादी एवं ग्रामोद्योग	• शिक्षा • स्वास्थ्यरक्षा • शोषण विरोध • अस्पृश्यता का उन्मूलन • सामाजिक परिवर्तन • समाज सेवा एवं राहत कार्य • पंचप्रथा	• पानी की सुविधा • साहित्यिक प्रकाशन	• नैतिक ग्राम संगठन

6. निष्कर्ष:

- गांधीविचार आधारित ग्रामविकास को आर्थिक, सामाजिक, संरचनात्मक और पर्यावरणीय पहेलुओमे बांटा जा सकता है
- गांधीविचार आधारित संपोषित ग्रामविकास की अहम बात यह है कि हम प्रकृत्ति का व्यय न करे बलकी जरूरतो के मुताबीक उसका उपयोग करे ।
- रचनात्मक कार्यक्रमो कों आर्थिक, सामाजिक और आर्थिक-सामाजिक पहेलु में बांटा जा सकता है।
- रचनात्मक संस्थाए रचनात्मक कार्यक्रमो के अनुलक्ष्य में अपने कार्य कर रही है।

- अभ्यास की रचनात्मक संस्थाए कही साल पूरानी है कम से कम 45 साल से भी पूरानी है ।
- रचनात्मक संस्थाओ ने संपोषित विकास के कार्यक्रमो में आर्थिक, सामाजिक, संरचनात्मक और पर्यावरणीय कार्यक्रमो किए है ।
- अभ्यास से यह बात सामने आती है की गांधीविचार को केन्द्र में रखकर काम करनेवाली रचनात्मक संस्थाओ द्वारा संपोषित ग्राम विकास कर सकते है ।

7. समीक्षा

हमलोग सोचते है गांधीविचार एक मात्र विचार है वह सिद्धांत के मॉडेल में सामिल नही हो सकता, किन्तु यह बात को नजरअंदाज नही कर सकते की कही गाँवो का विकास गांधीविचार का अपना साध्य बनाकर काम करनेवाली संस्थाओ सें हुआ है ।

दुसरी बात यह अहमियत रखती है की संपोषित ग्रामविकास सें आर्थिक, सामाजिक, संरचनात्मक और पर्यावरणीय विकास विकास होगा तो अबभी कहीं आबादी गाँवो में बस रही है उनका विकास होगा । जिसके प्रत्यक्ष लाभ ग्रामसमाज, प्रकृति और जीवसृष्टि को होंगे और परोक्ष लाभ राष्ट्र एवं विश्व दोंनो को होंगे ।

औद्योगीकरण से हमे जो सामान मिल रहा है उसकी दो कीमते हमे चुकानी पडती है । एक तो वित्तिय कीमत जो हम खरीदी के वक्त दे रहे है और दुसरी वास्तविक कीमत है जो पर्यावरणीय नुकसान और आनेवाली पेढी को जरूरी चीजो प्राप्ती न होनी की वजह से हमको चूकानी पडती है । एक बुद्धिमानी यह जरूर सोचेगा की उसको एक ही चीज खरीदने के लिए दो कीमत न चूकानी पडे।

गांधीविचार हम को न किन्तु ग्रामविकास की ओर ले जाते है मगर वह हमको संपोषित विकास की ओर ले जाते है ।

संदर्भ:

1. Benoy Krishna Hazra (December 2018) "SIGNIFICANT GANDHIAN COMMUNICATION AND ITS RELEVANCE FOR SUSTAINABLE RURAL DEVELOPMENT IN INDIA" Global Media Journal – Indian Edition, University of Calcutta, Calcutta. ISSN 2249 – 5835 Winter Issue/ December 2018 Volume: 9/ Number: 2, https://caluniv.ac.in/global-mdia-journal/SR-Dec-2018/SR1.pdf, Date- 20/12/23, 10.00 PM
2. Iyengar S.(2004), *"Sustainable Development and Indian Economy: Some Reflections"*, the E. F. Schumacher Memorial Lecture, Nagpur University, Center for Social Studies, Surat.
3. Meenu Sharma and Shikha (2016) "Exploring Gandhian Ideology for Sustainable Rural Development in India" Journal Global Values Vol- VII, No. 1, 2016, https://anubooks.com/uploads/session_pdf/166245202116.pdf, Date – 21/12/23, 9.00 PM.
4. Minhas Bagicha singh(1974), *planning and the poor*, S. Chand, New Delhi.
5. कोठारी, विट्ठलदास और पटेल अंबालाल (1997) "*गांधीजी का अर्थदर्शन*", गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
6. कुरेशी, मोहम्मद सईद. (2017, अप्रैल-मई)। "गांधी के आर्थिक विचार प्रेरणास्रोत एवं विचारक" नॉलेज कंसोर्टियम ऑफ गुजरात, अंक-21, अप्रैल-मई-2017, kcgjournal.org/kcg/social-science-26
7. ग्राम स्वराज संघ, वार्षिक रिपोर्ट, 2017-18, 2018-19, नीलपार।
8. गांधी, मोहनदास करमचंद (1941), "*रचनात्मक कार्यक्रम इसका रहस्य एवं स्थान*", नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद
9. गाँधी, मोहनदास (1930) अक्षरदेह, खण्ड-44, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, पृष्ठ संख्या 103
10. गांधी, मोहनदास (1942) *"स्वास्थ्य की कुंजी"*, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद
11. गांधी, मोहनदास करमचंद (1927), *"सत्य के प्रयोग"*, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद।
12. गांधी, मोहनदास करमचंद (1922), *"हिंद स्वराज"*, नवजीवन, अहमदाबाद।
13. देसाई नारायणभाई (2014), *"सौना गांधी रचनात्मक कार्यक्रम"*, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
14. पाठक रामनारायण (1970), गुजरात में रचनात्मक संस्थान और सेवक, गुजरात गांधी स्मारक निधि, अहमदाबाद
15. प्रभु, आरके(सं.)(1963), माई ड्रीम ऑफ इंडिया, नवजीवन, अहमदाबाद
16. भट्ट चैतन्य (2011), *"नोखी माटीना दीवडा"*, यंग मेन्स गांधीवादी एसोसिएशन, राजकोट
17. मोदी रमन (1977), *"रचनात्मक कार्यक्रम का सामाजिक दर्शन"*, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
18. शाह, दशरथलाल (1988)। *"आज के सन्दर्भ में रचनात्मक कार्यक्रम"* नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद
19. शाह, घनश्याम (1983), *"गांधी चिंध्या मार्गे ग्रामीण विकास एक मूल्यांकन"*, सामाजिक अध्ययन केंद्र, सूरत
20. शास्त्री, आर. वी. (1983), *"ग्रामीविकास नुं अर्थशास्त्र"*, पॉपुलर पब्लिकेशन्स, सूरत।
21. शाह, दिलीप (1988), *"भारतीय ग्राम अर्थतंत्र विकासना परिप्रेक्ष्यमां"*, विश्वविद्यालय ग्रंथ सूची बोर्ड, अहमदाबाद।
22. शुक्ला, निमिषा और सुदर्शन, अयंगर (दूसरा संस्करण, 2014) 'पर्यावरण अर्थशास्त्र और गांधीवादी विचार' "पर्यावरण अर्थशास्त्र: एक परिचय", गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद। पृष्ठ सं। 37.